International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

भूमंडलीकरण की चुनौतियाँ तथा जटिलताएं और 21वीं सदी की हिंदी कहानी

-डॉ. रिम्पी खल्लन संह

हिंदी कहानी ने अब तक एक लंबी वकास यात्रा तय की है। यह अपने समय , समाज और उसकी चुनौतियों से निरंतर साक्षात्कार करती रही है। हिंदी कहानी ने अपने समय के यथार्थ और उसके द्वंद्वों को गहनतम अ भव्यक्ति दी है। समय के साथ-साथ समाज भी बदलता है और उसकी बनावट भी और उसके साथ-साथ सामाजिक इकाइयाँ और संबंध भी बदलते हैं। जो समस्याएँ और चुनौतियाँ कुछ दशकों पहले सामाजिक समस्या नहीं मानी जाती थी , वे दो दशकों बाद सामाजिक समस्या का रूप ले सकती हैं। **1991** में हुआ भूमंडलीकरण और उसकी तेज़ी से बढ़ती प्र क्रया ने भारतीय अर्थव्यवस्था के ढाँचे को तो बदला ही साथ-ही-साथ भारतीय समाज में अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक परिवर्तन भी आने शुरू हो गए। 'भूमंडलीकरण' या 'वैश्वीकरण' आज एक बहुप्रच लत शब्द है, जिसका अर्थ कया जाता है व भन्न देशों और समाजों के बीच वस्तुओं का व्यापार, संस्कृति और भाषा तथा तकनीक का आदान-प्रदान इत्यादि। **1991** में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री नर संह राव ने 'खुले द्वार की नीति ' का समर्थन कया और बहुत सारी वदेशी कंपनियों को यहाँ आकर व्यापार करने की इजाजत दी। पहले भी 'वसुधैव कुटुंबकम्' की बात की जाती थी, परन्तु आज का वैश्वीकरण वसुधा को ही परिवार मानने के प वत्र भाव से नितांत दूर है। वैश्वीकरण की प्र क्रया ने उदारवाद के नाम पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माध्यम से संपूर्ण वश्व को एक खुली मंडी में बदल कर रख दिया है। वैश्वीकरण वास्तव में उत्पादित वस्तुओं और उपभोक्ताओं दोनों से संबं धत क्रया है। इसने मनुष्य मात्र को एक उपभोक्ता में परिवर्तित कर दिया है। आज मनुष्य अनंत लालसाओं का पुतला बन गया है। उसकी इन लालसाओं ने उसके जीवन और संबंधों को भी गहनता से प्रभा वत कया है। हिंदी कहानी उसके इस बदलते जीवन और जटिल होती दुनिया पर अत्यंत सूक्ष्मता से दृष्टिपात करती है।

ज्ञान प्रकाश ववेक की कहानी 'इनडोर गेम' वैश्वीकरण के प्रभाव रूपों को अत्यंत गंभीरता से उजागर करती है। यह कॉरपोरेट कल्चर और सहज मनुष्य के जीवन जीने की ललक और संघर्ष को अत्यंत गंभीरता से उद्घाटित करती है। सेठ आर.के. दास के परिवार के लोगों के लये जीवन केवल लेन और देन का ग णत मात्र बनकर रह गया है। परिवार का सबसे छोटा बेटा 'दीपक' संपूर्ण परिवार से अलग है और अपने घर के कृत्रिम और उपभोक्तावादी वातावरण से अलग हटकर सहज

जीवन जीना चाहता है। कहानी में बाद में शेष परिवार का कन्फेशन वैश्वीकरण द्वारा नि र्मत अपसंस्कृति के भयंकर रूप को सामने रखता है- "हम ग णत की खेतियाँ करते हैं। स्वार्थो के चाकू उगाते। साजिशों की तलवारें फसल के रूप में काटते हैं। एक-दूसरे के वजूद को नकारते। हमारी कीमती पोशाकों के नीचे जो जिस्म था- वेस्टलैंड था , कबाड़खाना। डायबिटिज़ और रक्तचाप जैसी बीमारियों का कोल्ट स्टोरेज। "1 वे आगे और पश्चात्ताप दर्ज करते हैं और परत-दर-परत इस उपभोक्तावाद की कलई खुलती चली जाती है। "हम तो अपने-अपने समीकरणों में मस्त थे। फैक्टरी का प्रोडक्शन, बाज़ार का कॉम्पीटीशन, शेयर इंडेक्स, रियल एस्टेट, पार्टियाँ, नए ड़ज़ाइन के जूते। नए कार के कपड़े , नए ढंग की सोच। नई तकनीक की चंताएँ। हमारी चंताओं में ऐश्वर्य था। जिंदगी उत्सव थी। हम जानबूझकर तनाव पैदा करते। फर उस तनाव को खारिज करने के लये पार्टी अरेंज करते, ड्रंक्स लेते।"2

यह कहानी जहाँ एक ओर व्यक्ति की भावनाओं के वस्तुकरण को दर्शाती है वहीं दूसरी ओर संबंधों को भी एक वस्तु में परिवर्तित करते वातावरण को अ भव्यक्त करती है , जिसमें सहजता सरे से गायब है और मनुष्य केवल उपभोग को ही सब कुछ मानकर जी रहा है। उसके लये आस्वादान ही सबकुछ है। इसी प्रकार रमाकांत श्रीवास्तव की कहानी 'बेटे को क्या बतालाओगे' भी भूमंडलीकरण के दुष्प्रभावों को चत्रित करती है। वैश्वीकरण के भीतर कोई नियम नहीं है , कोई सद्धांत नहीं है, बस बाज़ार ही सबकुछ है और यह बाज़ार भी मूर्त बाज़ार नहीं है या पहले जैसा बाज़ार नहीं है जहाँ व्यक्ति आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु खरीदारी के लये जाता था। इस बाज़ार का रूप इतना सूक्ष्म है क यह भावनाओं तक को वस्तु में बदल देता है। यह सर्वत्र है। वश्व बैंक जिसका एजेंट है। भूमंडलीय पूँजी जिसकी वाहक है। मृणाल पांडे की कहानी 'बीज' अंतराष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा वकासशील देशों पर डाले जा रहे दबाव और वकास के लये मनमानी जबरदस्ती को सामने रखती है। यह व्यंग्य की पैनी धार द्वारा यह बताती है क भारत की धरती का हित पढ़े- लखे दुभा षए समझे न समझे , अनपढ़ जनता अवश्य समझ सकती है। इस कहानी का एक पात्र कहता है- "हिंदी माध्यम की पढ़ाई वैज्ञानिक चंता नहीं देती सर , बस लड़ना, नारेबाजी करना सखा देती है। .... पहले इंसान को अपना बीज बचाकर रखना चाहिए। अब पहाड़ में क्या बचा ? नदियाँ, नाले सब सूख गए। सब चीज़ बसत बाहर से ही मँगानी हुई। खेती की उपज बाज़ार में , बाज़ार की उपज घरों में...दो-दो लड़ाई ने नहीं तोड़ा जिस हिम्मत को, उसे बाज़ार ने आग लगा दी। इस प्रकार ग्लोबल बाज़ार एक दैत्याकार राक्षस की भाँति छोटे बड़े देश की अर्थव्यवस्थाओं को अपने बड़े पेट में समेट लेना चाहता है। "3 इसी प्रकार गरिराज कशोर की कहानी 'गुम चोट उर्फ

Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

फाग लाइट की चोरी’ भूमंडलीकरण के राजनीतिक पक्ष को सामने लाती है। इसमें वश्व पटल पर अमेरिका के वर्चस्व और उसके प्रभाव को गहनता से अ भव्यक्त कया गया है। कहानी का यह अंश इस दृष्टि से महत्वपूर्ण है- “दे खए यह क्या हो रहा है। बुरा न मानिए- ये सब आप लोगों की यानी उच्च वर्ग की जिसे अंग्रेजी में प्री वलेज्ड क्लास कहते हैं- करतूते हैं। व शष्ट वर्ग ही अ व शष्ट वर्ग पर बमबारी करता आया है। बमबारी एक तरह की नहीं होती कई तरह की होती है। हम लोग जानते हैं, हज़ारों साल से अपमान और घृणा की बमबारी सह रहे हैं। अमेरिका तो संसार भर की व शष्टता का प्रतीक है , बल्कि कहिए, सरमौर। अपने इस मौर को बचाने के लये वह कुछ भी कर सकता है। आ खर रूस का शांति प्रस्ताव रद्दी की टोकरी में फेंककर चढ़ ही बैठा है न।”**4** वैश्विक स्तर पर एक बड़ी शक्ति होने के कारण मानव अ धकारों को भी शक्ति संपन्न राष्ट्र कैसे केवल अपने स्वार्थ के लये उपयोग में लाते हैं और दूसरे राष्ट्रों के लये नीतियाँ अलग होती हैं। आज चीन अमेरिका को अपदस्थ करके ऐसी ही वैश्विक ताकत बनना चाहता है।

इस प्रकार भूमंडलीय चुनौतियों में राजनीतिक असुरक्षा का भाव सबसे बड़ी चुनौती है। आज कई राष्ट्र भीतर-ही-भीतर असुर क्षत हुए हैं और मानव मात्र पर अस्मिता का संकट गहराता चला गया है। बाज़ार का वर्चस्व बढ़ता चला जा रहा है। राष्ट्र , रिश्ते, संबंध सब एक ब्रांड बनकर रह गए हैं। आज स्थितियाँ अत्यंत दुरुह और जटिल हो गई हैं। एक तरह से शीत युद्ध जैसा वातावरण ही सदैव बना रहता है। वीरेंद्र मोहन इसी की तरफ संकेत करते हुए लखते हैं क “इसी के साथ एक नये कस्म का पूँजीवाद इस देश में तेज़ी से पनपा है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों का सबसे दर्दनाक खलवाड़ भोपाल की गैस त्रासदी है। मी डया ने नयी समस्याएँ और चुनौतियाँ उत्पन्न की है। समकालीन कहानी के सामने ये चुनौतियाँ आश्चर्यजनक रूप से वक सत हुई हैं। यहाँ बदलते और उजड़ते गाँव हैं, समस्याग्रस्त कसान हैं, बढ़ते हुए शहर और कोठियाँ हैं , फैक्टरी और झोंप ड़याँ हैं , श्र मक हैं, संपन्न वर्ग की कॉलोनियाँ हैं। लूट , अपहरण और आतंक का कारोबार करने वाला वर्ग है , राजनीति है, बाढ़ है, सूखा है।”**5** आज ज्ञान का वास्त वक मूल्य भी कम हुआ है। ज्ञान का वखं डत रूप ही हमारे सामने हैं। केवल व्यवसायिक ज्ञान को ही प्रतिष्ठा दी जा रही है। सूचना तंत्र इतना वक सत है क संपूर्ण वश्व एक ग्राम में बदल चुका है, परंतु संप्रेषण के साधनों के इतना वक सत होने पर भी संप्रेषण का संकट गहराता जा रहा है। परिवारों में भी प्रतिद्वंद् वता का भाव ही अ धक देखा जा सकता है। परिवार में वृद्ध हा शए पर चले गए हैं या फर वृद्धाश्रमों अथवा वृद्ध गृहों में अपना जीवन काटने को अ भशप्त हैं, क्यों क युवा केवल भाग रहे हैं और भौतिक कामयाबी ही जीवन का एकमात्र लक्ष्य बनकर रह गया है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

वैश्वीकरण के इस जटिल मकड़जाल में सभी फँस कर रह गए हैं। बहुराष्ट्रीय कंपनियों में काम करने वाले **16** से **18** घंटे काम करते है। वे उनसे अ धक बोनस और रुपयों का लालच देकर दिन रात काम लेते हैं। स्वास्थ्य संबंधी अनेक नई तरह की समस्याएँ वक सत हुई हैं। व्यक्ति केवल कृत्रिम उपकरणों का गुलाम होता जा रहा है। जीवन प्रत्येक प्रकार से असंतु लत कया जाता जा रहा है। असंतु लत खान-पान , रहन-सहन, जीवन-शैली वशेष रूप से बच्चों और युवाओं को बुरी तरह प्रभा वत कर रही है। आज की सदी रहस्यों और जटिलताओं की सदी है। आज का बाज़ार उस निर्गुण ईश्वर की तरह है जिसका स्वरूप एक रहस्य है। इसी बाज़ार के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए दिनेश भ ने लखा है क "जिस सदी में हमने प्रवेश कया है , वह रहस्यों के उद्घाटन की सदी है। कृ ष युग , उद्योग युग और वज्ञान टैक्नॉलाजी के युग में बाज़ार था तो जरूर मगर बाज़ार सर्फ बाज़ार में था। वह मं डयों में था और ज्यादा-से-ज्यादा उन छद्म सौंदों में था जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय हित में गोपनीय ढंग से कए जाते थे। आज बाज़ार कहाँ नहीं है **?** वह आपकी जेब में, क्रे डट कार्ड, वीजा कार्ड और मोबाइल फोन बनकर है , आपके घर में स्काई शॉप बनकर उतर पड़ा है और टी.वी के पर्दे पर है , तो इस कदर है क रात-दिन आप बाज़ार-ही-बाज़ार देखते रहते हैं। अब जिसे भूमंडलीकरण कहा जाता है , वह भूमंडलीकरण जेब से जहान तक फैल गया है। जिस्म से लेकर आत्मा और आत्मा से लेकर परमात्मा तक का बाज़ार टी.वी. दिखा रहा है।"**6** वस्तुत: बाज़ार मनुष्य के चेतन से अवचेतन तक में गहरे उतरा है। इक्कीसवीं सदी की शुरुआती कहानियों में बाज़ार की यह घुसपैठ और उससे संबं धत स्थितियों का सूक्ष्म चत्रण मलता है। अमरीक संह दीप की कहानी 'एक कोई और बाज़ार ' भी इस घुसपैठ का प्रभावशाली चत्रण करती है- "ड्राइंगरूम गला फाड़-फाड़कर चीख रहा था- मुझे फोम के गद्दों वाला नया कीमती सोफा चाहिए, झूमर चाहिए, माडर्न पेंटिंग चाहिए , कलात्मक एंटीक वस्तुएँ चाहिए। बेडरूम का गुस्सा सातवें आसमान पर था- बरसात में पुराना कूलर काम नहीं करता। मुझे डनलप पलो चाहिए। रेशमी चादरें चाहिए, कालीन की रजाइयाँ चाहिए।"**7**

बाज़ार पूरे घर को निगल रहा है। घर अब घर से अ धक अजायबघर हो जाना चाहता है। सजी सजायी वस्तुओं की दुकान बन जाना चाहता है। पूरा घर एक नुमाईश की चीज में परिवर्तित हो रहा है। घर के बाकी कोने भी इससे अधूते नहीं रहे- "रसोई की मुटिंयाँ अलग तनी हुई थीं- मुझे कु कंग रेंज चाहिए, माइक्रोवेव कूकर चाहिए, इलेक्ट्रिक चमनी चाहिए, एक्वागार्ड चाहिए और वह सब कुछ चाहिए जो मेरे लये ए शयन के स्काईशॉप बेचती है। बाथरूम भी जिद पर था- मुझे इटै लयन बाथटब चाहिए , गीजर चाहिए, शॉवर चाहिए, वा शंग मशीन चाहिए , शानदार परफ्यूम

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

चाहिए।.... अपनी मांगों को लेकर घर का कोई हिस्सा भी पीछे नहीं था। सब गला फाड़-फाड़कर चीख रहे थे- हमें टेलीफोन चाहिए, पेजर चाहिए, कंप्यूटर चाहिए, कार चाहिए, ड्राइवर चाहिए। माली चाहिए, नौकर चाहिए। हमें वह हर फाइव स्टार की सुविधा चाहिए जो पूँजीपति , नेता और फिल्मी हीरो भोग रहे हैं।”**8** इस प्रकार उपभोक्तावाद घर की नस-नस में बस चुका है। पूरा परिवार केवल सब कुछ पा लेना चाहता है। इस पाने की अंधी दौड़ में घर का कोना-कोना शामिल है। घर संबंधों और आत्मीयता की जगह के स्थान पर सामान बटोरने का अड्डा बनकर रह गया है। इसी प्रकार घर के भीतर बाज़ार के चले आने से परिवार में तनाव और जटिलताएँ बढ़नी शुरू हो गई। पति-पत्नी का संबंध भी भोग-विलास की आकांक्षाओं की भेंट चढ़ गया। ‘एक कोई और’ कहानी में संबंधों के इस विघटन और तनाव को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। कहानी की नायिका भोग-विलास के सभी साधन अर्जित कर लेना चाहती है। उसके लिये पति इन सभी वस्तुओं को अर्जित करने का साधन भर बनकर रह जाता है। वह इन आकांक्षाओं के वशीभूत होकर उसके सम्मान को भी ठेस पहुंचाती है। “तुम निकम्मे हो, निखट्टू हो। आज तक कौन सा सुख दिया है तुमने मुझे ? मुझे डायमंड ज्वैलरी चाहिए , बनारसी और साऊथ सिल्क की साड़ियाँ चाहिए , पशमीने की शॉल चाहिए, लाबेला के सैंडिल चाहिए , लैक्मे की पूरी मेकअप रेंज चाहिए , शॉपिंग चाहिए, पिकनिक चाहिए, आउटिंग चाहिए।”**9**

बाज़ार ने संबंधों को भी उपयोगिता की तुला पर तौलना शुरू कर दिया है। अब संबंध भी उपभोग की इच्छाओं की पूर्ति के साधन मात्र बनकर रह रह गये हैं , उनमें आत्मीयता की ऊर्जा समाप्त होती जा रही है। ‘कंक्रीट की फसल का हकदार’ कहानी का राजीव घर लौटते हुए सोचता है “आज फिर सुननी पड़ेगी उसकी चपर-चपर, पता नहीं क्या हो गया उसे? अच्छी-भली दाल-रोटी खा रहे थे। भौतिक सुखों की चाहना करके आदमी कहाँ खुश रह सकता है ? इस चाहना का पेट बहुत बड़ा है, जितना भरे उतना ही खाली। सबको सबकुछ चाहिए। मोबाइल , कंप्यूटर, कार, अच्छे पकवान, ब्रांडेड कपड़े और बड़ा सा घर। कितने दिन से मेरे पीछे पड़ी है , एक फ्लैट ले लो। गोया फ्लैट न हो गया, चने-मरमुरे का कोन हो गया, झट से खरीदा और खट से लगे चबाने। इतना भी नहीं जानती कि घर बनाना आज इतना भी आसान नहीं। अव्वल तो अपने पास इतना पैसा है नहीं कि एकमुश्त दे पाऊँ और दूसरे कर्ज लो और सारी जिंदगी उतारते रहो। ”**10** उपर्युक्त कहानी और वैश्वीकरण की जटिलताओं तथा समस्याओं पर चर्चा करते हुए राजकुमार राकेश लिखते हैं कि “भूमंडलीकरण के नाम पर निजीकरण, गलाकाट उपभोक्तावादी स्पर्धा और नयी पूँजी के प्रसार के उठान ने हमारे जीवन मूल्यों, इस समय और पूरे समाज में जो लालसा भरी उथल-पुथल मचा रखी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell’s Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

है, उससे आप की कोई कहानी निरपेक्ष रह पायेगी , यह कल्पना करना ही बेमानी होगा। अंजु दुआ जै मनी की कहानी ‘कंक्रीट की फसल का हकदार’ कहानी इन्हीं अर्थों में हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। वहाँ मध्यवर्गीय आकांक्षाओं का भरा-पूरा फैलाव है, चकाचौंध और आकर्षण है, जिसने उसे ऋणों के बोझ का गुलाम बना दिया है। कहानी को पढ़ते लगता रहा , यह संघर्ष अंजु दुआ के व्यक्तिगत जीवन का भी संघर्ष है। वह उस नए बनते महानगरीय भारत की बुलंद तस्वीर है , जिसमें से गाँव और उसके वा सयों को हंकाला जा रहा है। वे ऊँचे फ्लैटों की दुनिया में रहने वालों की चाकरी करने को मजबूर हैं।”**11** इस प्रकार शहरों में स्लमों का वस्तार हो रहा है और एक बड़ा वर्ग नारकीय जीवन जीने को मजबूर है। हर जगह कंकरीट की इमारते हैं जो जंगल की तरह फैल रही हैं और जिन में रहकर आसमान तक दिखना कठिन है , केवल कंकरीट का ही वस्तार चारों तरफ दिखाई देता है।

बाज़ार ने स्त्री की देह को भी केवल और केवल एक वस्तु में बदल दिया है। स्त्री मुक्ति के जिस द्वार की तरफ बढ़ रही है , वह उसे वास्तव में मुक्त कर रहा है अथवा और भी अ धक उलझा दे रहा है, कहना कठिन है? कहानीकार पंखुरी सन्हा अपनी कहानी ‘समानांतर रेखाओं का आकर्षण’ में सौंदर्य प्रतियो गताओं के पीछे के सच को उद्घाटित करती हैं- “जो भी हो , ऐसी प्रतियो गताओं में सचमुच ह ड यां हड् डयाँ शरीक नहीं की जाती। हड् डयों का वजन, आकार-प्रकार, डील-डील कुछ भी बदला नहीं जा सकता , ऐसी प्रतियो गताएँ हड् डयों के ऊपर मांस, वसा और चमड़े के नियंत्रण से जीती या हारी जाती हैं।”**12** स्त्री का शरीर या पुरुष का शरीर एक केवल एक पुतले के रूप में तब्दील होकर रह जाता है , जिसे ब्रां डड कपड़ों से सुसज्जित कया जाता है , पर यहाँ देह ही सबकुछ है। देह के आगे का सच कोई देखना नहीं चाहता। इसी देह का उपयोग बाज़ार वज्ञापनों के लये करता है और देह का वस्तुकरण कर देता है। आज व्यक्ति से अ धक वज्ञापन महत्त्वपूर्ण है। शहर की सड़कों पर लगे पोस्टर से लेकर , खबरों, फल्मों, टीवी सब पर वज्ञापनों का बाज़ार लगा है। आज हम खबर कम और वज्ञापन अ धक देखते हैं। बाज़ार का मायावी तंत्र वज्ञापन की रंगीन दुनिया रचता है और माध्यम स्वयं संदेश बन जाता है। आज वज्ञापन ही साध्य है, वह केवल साधन नहीं है। बाज़ारवाद और वैश्वीकरण की इस गलाकाट प्रतियो गता ने स्थानीय उद्योग-धंधों को भी बहुत अ धक नुकसान पहुँचाया है। स्थानीय दुकानदारों का जीवन , उनकी आजी वका नष्ट हो गयी है। मॉल संस्कृति हावी होती जा रही है। जयनंदन की कहानी ‘घर फूँक तमाशा” इसी ओर संकेत करती है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

'घर फूँक तमाशा' कहानी में भूमंडलीकरण और उससे उत्पन्न बेरोज़गारी की त्रासदी को दिखाया गया है। इसमें सोनाराम के बाज़ारवाद के परिणामस्वरूप बेरोज़गार होने के कारण उनकी बेटी घर छोड़कर चली जाती है। सोनाराम अपनी इस पीड़ा का साझा कहानी के एक अन्य पात्र टेकालाल के साथ करता है- "मैं ही इसका जिम्मेदार हूँ , टेकालाल भाई इस लड़की के ब्याह को सोचकर मैंने एल.आई.सी. में एक स्कीम ले रखी थी। कारखाना बंद हो गया तो स्कीम भी बंद हो गई और पछले साल इसके पैसे निकालकर पत्नी की बीमारी में लगा दिए। शादी में देने के लये सामान खरीदकर रखे थे..... कुछ घरेलू सामान , पलंग, टी.वी., अलमारी, डाइनिंग सेट, कुछ गहने, कचन सेट। एक-एक कर वे भी बिक गए। बेटी की उम्मीद दम तोड़ती चले गई। मैं सचमुच उसका ब्याह कराने लायक कहाँ रह गया था। पहले तो दो-एक लड़के वाले लड़की देखने की बात चलाने में दिलचस्पी भी ले रहे थे, अब कोई भी दिलचस्पी नहीं ले रहा। बंद कारखाने के लेबर से लेन-देन की अपेक्षा नहीं रखी जा सकती ना।"**13**

इस पर भूमंडलीकरण से उत्पन्न बेरोज़गारी ने अनेक लोगों के जीवन में उथल-पुथल मचाकर रख दी। बहुत लोग आत्महत्या तक करने के लये बाध्य हुए। उनका जीवन अनेक परेशानियों से घिर गया। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अनेक स्थानीय कंपनियाँ को खरीद लया और अत्य धक मशीनीकरण तथा उनकी संरचना में बदलाव के कारण अनेक लोगों को अपने रोज़गार से हाथ धोना पड़ा। इस स्थिति को स्पष्ट करते हुए अ मत कुमार संह ने लखा है क "भूमंडलीकरण के केंद्र में ब्रेटनवुड संस्थाएँ , बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ और बाज़ार की शक्तियाँ होती है। यद्य प बहुराष्ट्रीय कंपनियों से भारत के एक वर्ग को रोज़गार भी मलता है, तथा प इन कंपनियों के चरित्र को समग्र रूप से समझना आवश्यक हो जाता है। रिसर्च यूनिट ऑफ पॉ लटिकल इकानॉमी के **1991** के अध्ययन के अनुसार, एक औसत वदेशी कंपनी इस देश में जितना निवेश करती है , वर्ष भर में कारोबार से उससे कहीं ज़्यादा वदेशी मुद्रा उठा ले जाती है। इन कंपनियों का एकमात्र उद्देश्य मध्यवर्ग की लालसा को उकसाकर धन कमाना है। कोई सामाजिक दायित्व नहीं है। यही नहीं , इसके फलस्वरूप भारत में आज लघु व कुटीर उद्योगों की स्थिति खस्ताहाल है। कृ ष भी बाज़ार की शक्तियों के समक्ष नतमस्तक है। कृ ष कार्य में लगे अ धकांशत: गरीब कसानों को कोई तकनीकी दक्षता प्राप्त नहीं है। आज समूचे भारत का कसान वर्ग कमज़ोर हुआ है। यह वर्ग प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से भूमंडलीकरण की नीतियों से प्रभा वत है।"**14**

इस प्रकार समाज का कमज़ोर वर्ग और भी अ धक कमज़ोर कया जाता चला गया है। सामाजिक वैषम्य और भी अ धक बढ़ता चला गया है। गरीबी और अमीरी के बीच की खाई भी

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 2, February 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

बढ़ती चली गई है। दिहाड़ी मजदूरों के परिवारों को और भी अ धक तंगहाली की स्थितियों में गुजर करना पड़ रहा है। ट्रेड यूनियनों की स्थिति नगण्य हो गई है। मनुष्य अंतहीन इच्छाओं के जाल में फँसता चला जा रहा है। संबंध श थल पड़ते जा रहे हैं और सब कुछ अर्जित कर लेने की चाह मनुष्य को रोबोट में तब्दील कर रही है। परिवारों के भीतर सब अपने निजी कोणों में सकुड़ते चले जा रहे हैं। इस प्रकार भूमंडलीकरण और बाज़ारवाद ने जीवन की सहजता को ही समाप्त करके रख दिया है और हम सब ऐसे भ वष्य की तरफ बढ़ रहे हैं , जहाँ व्यक्ति की देह से लेकर उसकी आत्मा तक बाज़ार की गुलाम बन चुकी है। हिंदी कहानी जीवन की इन उलझती परिस्थितयों को न केवल चौकन्नी दृष्टि से देख रही है, अ पतु अ भव्यक्त भी कर रही है। इक्कीसवीं सदी की कहानी का परिवेश अत्यंत जटिल परिवेश है और इस परिवेश के भीतर हिंदी कहानी और अ धक परिपक्व भी हुई है और इन परिस्थितियों की गंभीरता को लेकर अत्यंत संवेदनशील दृष्टि और प्रभावशाली भाषा के साथ वर्तमान जीवन के यथार्थ की उलझनों को अपने भीतर समेटती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. इनडोर गेम, ज्ञान प्रकाश ववेक, बीसवीं शताब्दी की हिंदी कहानियाँ, पृ. 283
2. वही, पृ. 283
3. बीज, मृणाल पांडे, कथा संग्रह 'चार दिन की जवानी तेरी' पृ. 93
4. गुम चोट उर्फ फॉग लाइट की चोरी, गरिराज कशोर, संपूर्ण कहानियाँ, पृ. 205
5. कथा साहित्य के सौ बरस (सं. वभूति नारायण राय, वीरेंद्र मोहन) पृ. 171
6. नई सदी में बाज़ार, समाज और शक्षा, दिनेश भ , भू मका से
7. एक कोई और, अमरीक संह दीप, पृ. 165-166
8. वही
9. वही, पृ. 166
10. कंक्रीट की फसल का हकदार, अंजु दुआ जै मनी, हरिगंधा, अप्रैल 2008, पृ. 36
11. समय, समाज और कहानी, हरिगंधा, अप्रैल 2008, पृ. 30
12. कस्सा-ए-कोहनूर, पंखुरी सन्हा, पृ. 7
13. घर फूंक तमाशा, जयनंदन, पृ. 6
14. भूमंडलीकरण और भारत: परिदृश्य और वकल्प पृ. 56-57

डॉ. रिम्पी खल्लन संह
अ सस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी वभाग
इन्द्रप्रस्थ महिला महा वद्यालय
स वल लाइन्स
दिल्ली 110054